वर्ष -17 दिसम्बर, 2021 अंक - 183

Regd. Postal No. Dehradun-328/2019-21
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

जीवन क्या है	02	देवात्मा के श्री चरणों....	20
देववाणी	03	श्रद्धा सुमन	25
32 वर्ष में मैंने	04	शुभ गृह प्रवेश	28
भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में..	08	विवाह अनुष्ठान	29
मुझ पर भगवान के देव जीवन.	11	शोक समाचार	30
नेचर के चारों जगतों के सम्बन्ध..	15	आत्मबल विकास महाशिविर	32

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।'

- देवात्मा

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : सुशान्त सुनील

For Motivational TalksèLecturesèSabhas :
Visit our YouTube channel : Shubhho Roorkee
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ₹ 100, सात वर्षीय ₹ 500, पन्द्रह वर्षीय ₹ 1000
मूल्य (प्रति अंक): ₹ 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

जीवन क्या है?

जीवन एक लक्ष्य है	–	प्राप्त करें
जीवन एक चुनौती है	–	सामना करें
जीवन कुदरत का उपहार है	–	स्वीकार करें
जीवन एक खेल है	–	खेलने का पुरुषार्थ करें
जीवन एक रहस्य है	–	उद्घाटन करें
जीवन एक संगीत है	–	गुनगुनायें
जीवन एक वचन है	–	निभायें
जीवन एक स्नेहधारा है	–	स्नान करें
जीवन एक साधना है	–	तपस्या करें
जीवन एक कर्त्तव्य है	–	निर्वहन करें
जीवन एक संघर्ष है	–	युद्ध करें
जीवन एक पहेली है	–	समाधान करें
जीवन एक रोमांच है	–	साहस करें
जीवन एक सुन्दरता है	–	प्रशंसा करे
जीवन एक शुभ अवसर है	–	लाभ उठायें!

महाशिविर सूचना

अपार हर्ष व गौरव की बात है कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 171 वाँ शुभ जन्म महोत्सव हरमिलाप धर्मशाला, साकेत कॉलोनी, रुड़की में बड़ी धूमधाम से दिनांक 18 से 20 दिसम्बर, 2021 को आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में मनाया जा रहा है। सीमित संख्या में ही प्रतिभागी आ पायेंगे। इसलिए पूर्व अनुमति लेकर ही पधारें। आप अपना रजिस्ट्रेशन 80778-73846 पर करवा लें। कोविड वेक्सीन की दोनों डोज लगवाने के बाद ही शामिल हों और इस सन्दर्भ में सर्टिफिकेट साथ लावें, ताकि असुविधा न हो।

प्रतिभागी 17 दिसम्बर सायं तक या 18 दिसम्बर प्रातः तक पहुँच जायें तथा 20 दिसम्बर दोपहर बाद प्रस्थान कर सकते हैं। रेल से आने वाले जन तदनुसार रिजर्वेशन करवा लें। 'शुभ हो!' परिवार की ओर से सभी को भावपूर्ण निमन्त्रण दिया जाता है।

निवेदक - मंत्री, सत्य धर्म बोध मिशन

आप और तुम में बड़ा फर्क होता है। आपको सामने दुःख नहीं प्रकट किया जा सकता, पर तुम के सामने दिल खोलकर रख सकते हैं।

देववाणी

हमने देखा है कि मनुष्य में अनुचित सुखप्रियता, अपहरणप्रियता, मिथ्याज्ञान या विश्वासप्रियता और मिथ्या लक्ष्यप्रियता मौजूद है। उसके इन चारों प्रेमों में जो दखल देता है, उसको मनुष्य घृणा करता है। देवात्मा मनुष्य को इन चारों अनुचित प्रेमों से निकालना चाहते हैं। इसलिये साधारणत: मनुष्य देवात्मा को घृणा करता है। देवात्मा उसको अच्छे नहीं लगते। यदि किसी में उच्च परिवर्तन आ गया है, तो वह उसकी अपनी इच्छा से नहीं आया है। उसके आत्मा पर नेचर का कोई अटल नियम पूरा हुआ है। देवात्मा के देवप्रभाव उस तक पहुँच गए हैं और उसका उसकी योग्यतानुसार भला हो गया है। लाखों जनों की ओर से विरोधिता के होने के बावजूद भी देवात्मा के देवप्रभावों के द्वारा एक-एक अधिकारी मनुष्य में उच्च परिवर्तन आया है, उसकी मौत से रक्षा हुई है, वह ज़िन्दगी की तरफ़ गया है तथा उसमें मौत से बचने और ज़िन्दगी की तरफ़ जाने की आकांक्षा पैदा हुई है। यह सब देवात्मा के देवप्रभावों की बदौलत है। मैं उपर्युक्त प्रकार के चारों नीच प्रेमों को नष्ट करने और उनकी जगह नयी ताक़तें पैदा करने के लिये आया हूँ, जिससे मुल्क और क़ौम बेहतर बनें। तुम्हारे इन चारों प्रेमों में से यदि कोई प्रेम घटता है, तो तुमको घबराना नहीं चाहिये। तुम्हें तैयार रहना चाहिये, इन प्रेमों को घटाने के लिए। अपने दिल के दरवाज़ों को बन्द न रखो। देवात्मा के देवप्रभावों को अन्दर घुसने के लिए अपने दिल के दरवाज़े खोल दो।

– देवात्मा

देवात्मा अंक

'सत्यदेव संवाद' का प्रस्तुत अंक 'देवात्मा अंक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। हमारे मार्गदर्शक व विज्ञानमूलक सत्यधर्म के प्रर्वतक गुरु देवात्मा के 171वें शुभ जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों के लिए यह अंक एक बहुमूल्य उपहार है। इस अंक में उनके महान् शिष्यों यथा सर्व श्रीमान् अमर सिंह जी धर्म बल जी, परमेश्वर दत्त जी व पी.वी. कनल जी के अपने अद्वितीय गुरु देवात्मा के प्रति उनके निजी अनुभव एवं भाव प्रकाश दिए जा रहे हैं। आशा है कि इनसे सभी पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे।

कर्मभूमि में फल के लिए श्रम सबको करना पड़ता है, गुरु केवल हमें लकीरें देता है रंग तो हमें ही भरना पड़ता है।

32 वर्ष में मैंने श्री देवगुरु भगवान् के अद्वितीय जीवन के सम्बन्ध में क्या कुछ देखा

मेरी आयु लगभग साढ़े सोलह वर्ष की थी कि जब मुझे पहले-पहल श्री देवगुरु भगवान् के दर्शन करने का अधिकार प्राप्त हुआ। उस समय मैं लाहोर के गवर्नमेंट स्कूल में शिक्षा पाता था। श्री देवगुरु भगवान् ने उन्हीं दिनों जीवनव्रत ग्रहण किया था। तबसे ही मुझे श्री देवगुरु भगवान् के तेजस्वी व्याख्यानों और उपदेशों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके भीतर के उच्च भावों की चिंगारियाँ उस समय निकल-निकलकर मेरे हृदय तक पहुँचती थी। उनका धर्म रूप मुझे निहायत आकर्षणीय अनुभव होता था और मेरा हृदय उनके इस रूप के लिए ज़ोरदार आकर्षण अनुभव करता था। उन्होंने इस देश और मानव जगत् के उद्धार व कल्याण के लिए महात्याग करके महाव्रत ग्रहण किया था। उनके महात्याग की ज़बरदस्त स्पिरिट ने मेरे दिल को भी हिलाना शुरू किया और उसने मेरे दिल पर ऐसा जादू का सा असर किया कि उनके जीवनव्रत ग्रहण करने के दो साल बाद मैं भी उनके सर्व्वोच्च कार्य में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर हो गया। इस बात को भी अब तीस साल पूरे होने को हैं।

अब मेरी आयु साढ़े 48 वर्ष की है। जब शुरू-शुरू में मुझे श्री देवगुरु भगवान् के दर्शन प्राप्त हुए और उनके व्याख्यानों व उपदेशों के सुनने का अधिकार प्राप्त हुआ; तबसे यदि गणना की जाये, तो 32 साल और जब से मैंने अपनी ज़िन्दगी को श्री देवगुरू भगवान् के कार्य के लिए भेंट किया है; तब से अगर गिना जावे, तो तीस साल हो चुके हैं कि जिस समय से मुझे श्री देवगुरु भगवान् को जानने और उनके जीवन की विभिन्न छोटी बड़ी क्रियाओं को और विभिन्न सम्बन्धों में उनके विभिन्न वार्ताओं को अपनी आँखों से देखने का अवसर मिला है। इस सारे लम्बे काल में मैंने उनके अद्वितीय जीवन के विषय में जो कुछ देखा है, उसे अपनी तुच्छ योग्यतानुसार नीचे दर्ज करता हूँ-

1. श्री देवगुरु भगवान् के भीतर हर प्रकार के पाप व बुराई के लिए प्रबल घृणा वर्तमान है। वह किसी भी पाप व बुराई को देखकर अपने हृदय में बहुत चोट अनुभव करते हैं और उसके दूर करने के लिए वह पूरा जोर लगाते हैं।

2. दुनिया में चारों ओर जो पाप फैला हुआ है, उससे वह बहुत सदमा हासिल करते हैं और उससे मानव जगत् को निकालने के लिए उनके भीतर प्रबल व्याकुलता वर्तमान है और वह एक-एक पापी को पाप से निकालने के लिए बहुत संग्राम करते हैं।

उठो तो ऐसे उठो फक्र हो बुलन्दी को, झुको तो
ऐसे झुको नाज़ करे बन्दगी भी।

3. वह आत्माओं के भीतर धर्म की उच्च शक्तियों को उत्पन्न करना चाहते हैं और पिछले बत्तीस साल में उन्होंने उसके सम्बन्ध में बहुत सख्त परिश्रम और संग्राम किया है।

4. उनके भीतर न केवल मनुष्य जगत् के सम्बन्ध में, बल्कि पशु जगत्, उद्भिद जगत् और भौतिक जगत् के सम्बन्ध में भी प्रबल हित भाव वर्तमान है और वह उनमें से प्रत्येक जगत् के हित के लिए यत्न करते हैं।

5. उनके भीतर सब प्रकार के कुसंस्कारों, मिथ्या विश्वासों और कुरीतियों से भी प्रबल घृणा वर्तमान है और वह उन्हें दूर करने के लिए संग्राम करते हैं।

6. वह अपनी सन्तान, अपनी पत्नी, अपने सेवकों, अपने धन और मकान के मोह से ऊपर हैं। और उनमें से यदि कोई उनके धर्म मार्ग में विघ्नकारी प्रमाणित हो, तो वह अपने भीतर के धर्म बल के द्वारा उसके बन्धन पर विजयी होकर अपने उच्च मार्ग के लिए सदा सच्चे रहते हैं।

7. उनके भीतर अपने जीवनव्रत की सिद्धि के लिए हर प्रकार का त्याग करने का प्रबल भाव वर्तमान है और उन्होंने इस लक्ष्य के लिए विभिन्न प्रकार का अद्वितीय त्याग किया है।

8. उन्होंने अपने जीवन के उच्च प्रभावों के द्वारा और भी कितने ही जनों के अन्दर इस त्याग का प्रबल भाव उत्पन्न कर दिया है।

9. उनके धर्म रूप अथवा देव रूप के भीतर से ऐसी किरणें निकलती हैं कि जो अधिकारी आत्माओं तक पहुँचकर उनके अन्दर के पाप, मोह और कुसंस्कारों को दूर करती हैं।

10. उनके भीतर सफ़ाई व तरतीब का प्रबल भाव वर्तमान है और वह किसी चीज़ या मकान को मैली अवस्था में या उनमें बेतरतीबी देखकर बहुत तकलीफ़ अनुभव करते हैं। और जहाँ तक सम्भव हो, उसे दूर करके सफ़ाई और तरतीब लाने के लिए संग्राम करते हैं।

11. उनके भीतर वक्त़ की पाबंदी का जबरदस्त भाव वर्तमान है। और वह न सिर्फ़ स्वयं अपने कुल कामों को ठीक समय पर और नियत प्रतिज्ञा के अनुसार पूरा करते हैं, बल्कि यदि कोई अन्य जन उनके सम्बन्ध में इस पहलु में ग़लत जावे, तो उससे बहुत तकलीफ़ अनुभव करते हैं।

12. उनके भीतर सब सम्बन्धों में अनेकता के लिए गहरी घृणा का भाव

यह निश्चित है कि जो किसी की परवाह नहीं करता, उसकी परवाह भी कोई नहीं करेगा।

वर्तमान है और वह उसे दूर करना चाहते हैं और सब सम्बन्धों में वह उच्च गतिमूलक एकता लाना चाहते हैं।

13. वह आत्माओं का सब अंगों में हित और विकास साधन करते हैं। जो जन उनके देव रूप के उच्च प्रभावों में आते हैं, जिस-जिस पहलूमें उनमें योग्यता होती है, उस-उस पहलू में उनका विकास हो जाता है।

14. उन्होंने विश्वगत सारे सम्बन्धों में जो यज्ञों की शिक्षा दी है, वह और कहीं देखी नहीं जाती।

15. उन्होंने आत्मा और उसकी नीच व उच्च गतियों, पाप व पुण्य, उनकी सज़ा व जज़ा, धर्म व अधर्म आदि के विषय में जो विज्ञानमूलक सत्य शिक्षा दी है, वह पूर्णत: अद्वितीय है।

16. उनके भीतर विरोधियों की विरोधिता का मुकाबला करने की जबरदस्त ताक़त मौजूद है। उन्होंने एक-एक बार विरोधियों के बड़े-बड़े दल में खड़े होकर बिल्कुल बेधड़क रूप से उनकी मिथ्या शिक्षा और नीच ज़िन्दगियों की प्रकृत हक़ीक़त को उनके सामने प्रगट किया है।

17. उनके भीतर अपनी स्थापन किए हुए मिशन के लिए प्रबल प्यार वर्तमान है और वह उसे किसी प्रकार से हानि पहुँचती हुई देखना सहन नहीं करते। और पूरे ज़ोर से उसकी सब प्रकार की हानि से रक्षा करना चाहते हैं।

18. अपने जीवनव्रत की सिद्धि के लिए उन्होंने जिस प्रकार से दिन व रात टूट-फूटकर काम किया है और घोर से घोर संग्राम और परिश्रम किया है, उसका भी सानी कहीं देखा नहीं जाता।

19. मैंने उनके सैकड़ों व हज़ारों लैक्चर और उपदेश सुने हैं तथा अन्य लोगों के भी सैकड़ों और हज़ारों लैक्चर और उपदेश सुने हैं, परन्तु श्री देवगुरु भगवान् के लैक्चरों और उपदेशों में जो सरलता और उच्च प्रभाव मैंने देखे हैं, वह और किसी के लैक्चर और उपदेश में नहीं देखे।

20. मैंने विभिन्न धर्म पुस्तकों का अध्ययन किया है, और उनमें से कई एक की कई अच्छी बातों के लिए मेरे भीतर सम्मान का भाव वर्तमान है, परन्तु इन सबकी शिक्षाएं कल्पनामूलक हैं। उनकी तुलना में मैंने श्री देवगुरु भगवान् की सब छपे हुए लेखोंऔर रचनाओं का अध्ययन किया है और उनकी शिक्षा को विज्ञानमूलक पाया है। उनकी इस शिक्षा की तुलना में औरों की कल्पनामूलक शिक्षाएं कुछ भी हक़ीक़त

अच्छे लोगों की एक खुबी यह भी होती है कि उन्हें याद
रखना नहीं पड़ता वे याद रह जाते हैं।

नहीं रखतीं।

21. उनके विरुद्ध जितनी किताबें छपी हैं, मैंने उन सबका अध्ययन किया है और उन पर जो घोर से घोर अपमानमूलक और झूठे इलज़ाम मुख़ालिफ़ों ने लगाये हैं, उन्हें पढ़ा है और उन सबको पढ़कर उनकी हस्ती को इन इलज़ामों से पवित्र व साफ़ देखा है।

सारांश यह है कि मैंने वर्षों तक उनके साथ उनके घर में रहकर और वर्षों तक उनके एक या दूसरे आश्रम में रहकर या उनके साथ सफ़र में रहकर उनको जीवन के विचार से और शिक्षा के विचार से एक अद्वितीय महापुरुष और देवरूपधारी सत्य देव अनुभव किया है। मुझे जो ऐसे अद्वितीय महान पुरुष के श्री चरणों में आने का अधिकार प्राप्त हुआ है, मैं उसे अपने बड़े सौभाग्य अनुभव करता हूँ।

इससे न केवल मेरा विभिन्न पहलुओं में बहुत बड़ा हित साधन हुआ है, अपितु मेरे पारिवारिक जनों, मेरे नगरवासियों और मेरे देशवासियों का भी बहुत हित साधन हुआ है। मैं ऐसे भगवान् को उनके इस सारे दान के लिए जितना धन्य-धन्य कहूँ, उतना थोड़ा है। और जिस क़दर मैं औरों के सम्मुख उनकी महिमा गान करके उन्हें भी उनका आशिक बनाऊँ और उन्हें भी उनकी शरण में आने के लिए तैयार करूँ, उसी कदर उनका भी सच्चा हित साधन है। मैं ऐसे पूर्णांग धर्मावतार सत्य देव की महिमा को पूरे दिल से गाऊँगा और औरों तक उनके शुभ संवाद को पहुँचाकर उनकी ओर उनके दिलों को आकृष्ट करूँगा और इस प्रकार उनके कार्य के लिए अधिक से अधिक सेवाकारी प्रमाणित हूँगा।

श्री देवगुरु भगवान् का पुराना सेवक
- अमर सिंह
साभार 'जीवन तत्व' नवम्बर 1914 ई0

(भगवान् के महान् कार्य के लिए श्रीमान् भाई अमर सिंह जी आखिरी दम तक अधिक से अधिक सेवाकारी प्रमाणित होते रहे हैं - सम्पादक)

जो भविष्य का मद नहीं करता, वही वर्तमान का
आनन्द ले सकता है।

भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में मेरी आँखों देखी घटनाएं

एक बार का ज़िक्र है कि मैं शाम के समय भगवान् देवात्मा के बग़ीचे में सेवा का कुछ काम करने के लिए गया। वहाँ जाकर मैंने कई वृक्षों के नीचे के सूखे पत्ते इकट्ठे किए और उन्हें बगीचे से बाहर एक जगह खाद में डाल दिया। भगवान् देवात्मा उस समय अपने देवालय के बरामदे में एक कुर्सी पर विराजमान थे। उन्होंने मुझे सूखे पत्ते ले जाते देखकर अपने श्री चरणों में बुलाया और मुझे इस प्रकार का हितकर उपदेश दिया :-

यह सूखे पत्ते उठाने का काम कोई बड़ा काम नहीं है। इस समय तुम यदि लिखने, पढ़ने या किसी के साथ हितकर बातचीत करने वा अपने जिम्मे का कोई और काम कर सकते, तो वह इन पत्तों के उठाने की अपेक्षा बहुत लाभदायक और ज़्यादा क़ीमती काम हो सकता था। हाँ, यदि तुम अपनी शारीरिक और दिमाग़ी अवस्था के विचार से अपने आपको इस समय ऐसा थका हुआ महसूस करते हो कि उपर्युक्त प्रकार का अपेक्षाकृत कोई बढ़िया दर्जे का काम नहीं कर सकते और कुछ न कुछ हल्की शारीरिक सेवा करने की योग्यता रखते हो, तो फिर यही सूखे पत्ते उठाने का काम अच्छा है।

मतलब यह है कि अपनी ज़िन्दगी के प्रत्येक समय को जहाँ तक हो सके अपने हित और अपनी जिम्मेवारियों का ख्याल करके बेहतर से बेहतर तौर पर सुफल करना चाहिए और जैसे एक-एक जन जो धन कमाने की इच्छा रखता हो, उसे अपने उस समय को कि जिसमें वह दस रुपए कमा सकता है दो पैसे कमाने में खोना नहीं चाहता, वैसे ही कोई आत्महित अभिलाषी जन जिस समय अपने और दूसरों के हित की कोई ज़्यादा क़ीमती गति कर सकता हो, उस समय में उसे बहुत थोड़ी क़ीमत की कोई गति करके घाटे में नहीं रहना चाहिए।

भगवान् देवात्मा के उपर्युक्त प्रकार के महाहितकर उपदेश को सुनकर जहाँ उपर्युक्त विषय में मेरे सामने भगवान् देवात्मा की महानता विशेष रूप से प्रगट हुई और मेरा हृदय गहरी श्रद्धा के भाव से उनके श्री चरणों में झुक गया, वहाँ विविध सेवा के कामों के करने के विषय में मेरे सामने एक नई दुनिया खुल गई और उसमें प्रवेश करके मैं पहले से ज़्यादा बेहतर तौर से अपना आत्मिक भला करने के योग्य बन गया।

एक बार का ज़िक्र है कि भगवान् देवात्मा शाम के समय जब बहुत थकी हुई हालत में अपने बाग़ीचे में कुर्सी पर आराम कर रहे थे, तब मैं किसी ज़रूरी काम के लिए

अच्छी ज़िन्दगी जीने के दो ही तरीके हैं। जो पसन्द है उसे हासिल कर लो, जो हासिल कर लो, जो हासिल हैं उस पसन्द करना सीख लो।

उनके श्री चरणों में हाज़िर हुआ। उन्होंने और बातचीत के सिलसिले में अपने देव स्वभाव के निम्नलिखित दो नियमों को भली-भांति मुझ पर प्रगट किया -

1. जब तक उनका शरीर और उनका दिमाग़ कुछ भी सेवा करने के योग्य हों, तब तक उनके द्वारा कोई सेवा का काम करते रहना व उन्हें किसी सेवा के काम के योग्य बनाने का यत्न करते रहना।

2. अपने कार्यगत सारे समय को मुख्य और गौण का विचार करके ख़र्च करना।

उपर्युक्त दोनों उच्च नियमों की और ज़्यादा स्पष्ट करते हुए कृपा सागर भगवान् देवात्मा ने फ़रमाया कि हम अपना प्रतिदिन आमतौर से इस प्रकार व्यतीत करते हैं -

(1) प्रातः काल चार बजे शयन त्याग।

(2) प्रायः 05:30 बजे तक अपने और दूसरों के भले के लिए शुभकामना का साधन अर्थात् विभिन्न अधिकारी अस्तित्वों तक अपनी अद्वितीय देव ज्योति और अपने अद्वितीय देव तेज की किरणों को पहुँचाकर उनके सर्वोच्च कल्याण साधन में सहायक बनने का विशेष यत्न व संग्राम।

(3) ज़रूरियात से निवृत्ति और थोड़ा सा आहार।

(4) अपने शरीर को ज़्यादा और बेहतर दर्जे का सेवाकारी बनने के लिए सैर।

(5) सैर से वापिस आकर अपने अद्वितीय देवरूप और अपनी अद्वितीय धर्म शिक्षा आदि के विषय में कोई नया लेख लिखने व पहले के किसी लेख को ठीक करने का काम।

(6) लिखने पढ़ने के काम के अयोग्य हो जाने पर कुछ देर भौतिक और उद्भिद जगत् की सेवा करना।

(7) स्नान और भोजन।

(8) नए सिरे से काम करने के योग्य बनने के लिए थोड़ी देर आराम और मन-बहलाव के लिए थोड़ी देर कोई खेल।

(9) रोज़ाना अंग्रेजी अख़बार का अध्ययन।

(10) एक या दूसरी हितकर पुस्तक का अध्ययन।

(11) डाक में आए हुए पत्रों आदि को सुनना और समाज के सब विभागों के मंत्रियों आदि के साथ मिलकर सामाजिक ज़रूरी कामों को निपटाना व किसी अन्य जन

एक सच्चा भला चाहने वाला आपसे हर तरह की बातें शेयर करता है। पर धोखा देने वाला आपको अच्छी लगने वाली ही बातें करता है।

के भले के लिए उससे मिलना और उससे हितकर बातचीत करना।

(12) दिमाग़ी काम करने के अयोग्य होने पर भौतिक और उद्‌भिद जगत् की कोई सेवा का काम करना व कराना।

(13) शाम का आहार।

(14) शारीरिक और लिखने-पढ़ने के कामों के योग्य न रहने और बहुत ज़्यादा थक जाने पर कुर्सी पर बैठ कर आराम करना और एक या दूसरे जन व समाज के भले आदि के विषय में कोई विचार करना।

(15) जब उपर्युक्त प्रकार की हितकर चिन्ता के करने के भी योग्य न रहना, तब फिर थकान को दूर करने या मन-बहलाव के लिए थोड़ी सी देर ताश खेलना।

(16) उपर्युक्त विधि से सारा दिन निराली प्रकार के हितकर कार्य में व्यतीत करने के बाद जब शरीर और दिमाग़ कुछ भी सेवा के काबिल न रहे, तब नींद के लिए चारपाई पर लेटना और सोने के बाद फिर पहले की न्याईं चार बजे शयन त्याग करना और उपर्युक्त प्रकार के सब हितकर कार्यों में रत होना।

भगवान् देवात्मा के सारे दिन की उपर्युक्त प्रकार की निराली हितकर लीला मैंने वर्षों लगातार अपनी आँखों से देखी है और उसे देख-देखकर मेरा हृदय जिन उच्च भावों से भर जाता रहा है, उसका मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता।

भगवान् देवात्मा इस दुनिया में रहते हुए एक तरफ़ प्रतिदिन जिस प्रकार के हितकर कार्यों में अपना जीवन व्यतीत करते रहे हैं, जहाँ उन कार्यों की महिमा असीम है, वहाँ वह प्रतिदिन जिस मात्रा में विविध प्रकार का हितकर काम निकालते रहे हैं, उसकी तुलना भी किसी और जन से कुछ भी नहीं हो सकती।

इसके सिवाय भगवान् देवात्मा की यह महिमा भी अद्वितीय है कि वह दिन भर में कामों में जहाँ मुख्य और गौण का पूरा ख्याल रखते थे, वहाँ अपनी ज़िन्दगी का कोई मिनट भी व्यर्थ नहीं खोते थे, अर्थात् अपना सारा समय केवल सत्य और हित के सर्वोच्च देव अनुरागों से परिचालित होकर उन्हीं की जय और उन्हीं की उन्नति के लिए खर्च करते थे, तब ऐसे परम पूजनीय भगवान देवात्मा के ऐसे निराले देवरूप की जितनी भी महिमा गाई जावे, उतनी ही थोड़ी है। काश, भगवान् देवात्मा के देवरूप की उपर्युक्त प्रकार की देव लीला अधिक से अधिक रौशन रूप में मेरे सामने आ सके और मैं उससे अधिक से अधिक आप लाभ उठा सकूँ और अन्ध अधिकारी जनों को लाभ पहुँचाने का हेतु बन सकूँ!

– धर्मबल (सेवक 25/9)

आप जो सोचते हैं, उससे हज़ार गुना करने की शक्ति आप में है।

मुझ पर भगवान् के देव जीवन के प्रभाव

पिछले प्राय: दो वर्ष तक श्री देवगुरु भगवान् के श्री चरणों में वास करके उनके जीवन के साक्षात् पवित्र प्रभावों को लाभ करने और उनके द्वारा अपना हित साधन करने का जो महान् अवसर मुझे मिला है, उसकी याद मेरे हृदय को सदा हरा भरा रखेगी, और उसका वर्णन मेरे लिए व मेरे साथी अधिकारी सेवकों के लिए जीवनदायक प्रमाणित होगा। इसलिए उसका कुछ सार इस लेख के द्वारा मैं अपने साथी सेवकों तक पहुँचना चाहता हूँ -

1. श्री देवगुरु भगवान् का सारा ही जीवन उच्च नियमों के द्वारा परिचालित होता है। किसी उच्च नियम को छोड़कर अगर उनसे कोई बात भी करना चाहता है, तो उनके लिए उसका सुनना तक कठिन हो जाता है। ऐसे ही एक अवसर पर उन्होंने फ़रमाया था, "हमारा आत्मा तो उच्च नियमों में पला है। किसी सत्य और शुभ नियम के अनुसार कोई हमसे बातचीत करे, तो हमारी समझ में आती है अन्यथा नहीं आती और हम एक कठिन उलझन में पड़ जाते हैं।" वह ऐसे उच्च नियमानुरागी है कि उन्होंने एक बार फ़रमाया, "बिना कारण मैं एक कांटे की तकलीफ़ भी सहना नहीं चाहता, परन्तु किसी उच्च नियम के पालन में चाहे कैसे ही कठिन और घोर से घोर दु:ख और कलेश मुझे सहने पड़े, तो भी मैं खुशी से उन्हें सहन करने के लिए तैयार रहता हूँ, और यह निश्चय जानता हूँ कि मेरे इस प्रकार के संग्राम से अन्त में सत्य और हित की ही जय होगी।" उनके इस उच्च नियमानुरागी पूर्ण और महान् जीवन के मुझ पर बार-बार इतने प्रभाव पड़े हैं कि जिससे मेरे जीवन की गठन में अवश्य कुछ परिवर्तन आया है।

2. श्री देवगुरु भगवान् के हृदय में समयानुसार मुख्य और गौण के विषय में सिद्धान्त करने का एक ऐसा विवेक वर्तमान है कि जब किसी विशेष समय में दो या कई आवश्यक अथवा हितकर कामों में से कोई एक ही पूरा हो सकता हो, तब वह अति सुगमता के साथ उसमें से गौण को छोड़कर मुख्य को ग्रहण कर लेते हैं। उनके जीवन से बार-बार इस प्रकार के फ़ैसले को देखकर मेरे भीतर जहाँ मुख्य और गौण सम्बन्धी कुछ विवेक जाग्रत हुआ है, वहाँ गौण को छोड़कर मुख्य के ग्रहण करने का भाव भी बढ़ा है।

3. श्री देवगुरु भगवान् के भीतर कर्त्तव्य भाव अत्यन्त प्रबल रूप से काम करता है। इस महत् भाव से परिचालित होकर विविध सम्बन्धियों के सम्बन्ध में उन्हें काम करते हुए देखकर, मैंने आश्चर्य और अमिट प्रभाव प्राप्त किए हैं। एक बार अधिक मानिसक काम करते-करते उनके सिर में दर्द और चक्कर आरम्भ हो गया।

यदि कोई व्यक्ति आपको गुस्सा दिलाने में सफल होता है, तो ऐसा मान लें कि आप उसके हाथ की कठपुतली हैं।

सारी स्नायु प्रणाली चूर-चूर हो गई। इतनी दुर्बलता हो गई कि बोलने तक की शक्ति न रही। इस अवस्था में उन्होंने मुझे बुलाया और ज़ोर लगाकर अपनी ज़ुबान खोली और मुझे श्रीमान् मोहन देव जी को, 'सिन्ध उपकारक' की चार वर्ष तक सन्तोषजनक सेवा करने और उसके पांचवें वर्ष में पांव रखने पर मुबारिकबाद देने, प्रसन्नता का प्रकाश करने और आशीर्वाद देने के सम्बन्ध में पत्र लिखने की आज्ञा दी। बड़ी बहू जी की बीमारी के दिनों में आप बीमार होने पर भी वह उनके हित के लिए पर्वताश्रमवासियों को लेकर मंगल कामना के विशेष साधन करते रहे। वह कई बार ज़ोरदार वर्षा के समय में भी सोलन की तेज़ हवा से अपने कमज़ोर पौधों की रक्षा के लिए यत्न किया करते थे। प्रायः प्रतिदिन ही इस भाव के सम्बन्ध में उनकी विचित्र घटनाएं मेरे देखने में आती रही हैं और मेरे भीतर कर्त्तव्य भाव को जाग्रत और उन्नत करने में मददगार बनी हैं।

4. श्री देवगुरु भगवान् के जीवन में मैंने परहित भाव का इतना प्रबल अधिकार देखा है कि उसके वशीभूत होकर उनका रोगी, वृद्ध और दुर्बल शरीर भी उनके हाथ में नाचता रहता है। उनके आत्मिक परोपकार विषयक विभिन्न भावों के प्रकाश अथवा उनके विभिन्न हित साधन विषयक ज्वलन्त उत्साह को देखकर और ऐसे विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में उनकी महा तेजस्वी बातचीत को सुनकर, यह मालूम नहीं होता कि वह वृद्ध अथवा रोगी हैं। इसलिए उपर्युक्त उच्च भावों से परिचालित होकर वह अनेक बार इतना अधिक परिश्रम करते हैं और अपने दुर्बल व रोगी शरीर से इतना अधिक काम लेते हैं कि जिससे वह अब तक विश्राम न पाने से पनपने में नहीं आता। एक बार उन्होंने अंग्रेज़ों में काम करने की शक्ति की महिमा को इस प्रकार प्रकाशित किया :-

"हमारे देश में आँखें बन्द करके ध्यान, समाधि से उंघने वा बेसुध हो जाने वालों को महान् और आदर्श पुरुष जाना जाता है, परन्तु यूरोपियन इसके विपरीत आंखें खोलकर और आस्तीनें चढ़ाकर किसी हितकर लक्ष्य के लिए संग्राम करने वालों को महा पुरुष समझता है। पहला अपने विभिन्न सम्बन्धों में कर्त्तव्य साधन के विचार से बेसुध और उदासीन होने में खूबी समझता है, परन्तु दूसरा इसके विपरीत कर्त्तव्य पालन विषयक कठिनाइयों में पड़कर सफल काम होना मनुष्यता जानता है। दोनों के भावों और विचार में कितना अन्तर! पहला बेसुधि का पथ ग्रहण करके रोड़ों और पत्थर की दशा को अपना लक्ष्य बनाता है और चेतनता से निकलकर फिर जड़ की

उस आवस्था का कोई मूल्य नहीं, जिसे आचरण में न लाया जा सके।

ओर गमन करना चाहता है तथा दूसरा कर्त्तव्यपरायण बनकर अधिक से अधिक चेतन वा सुध बनना चाहता है।"

एक और अवसर पर उन्होंने फ़रमाया, "जब तक मेरा सिर व शरीर काम करने से न रह जावे, तब तक मेरा बराबर काम करने को जी चाहता है।" कितनी बार उन्होंने फ़रमाया, "अपने ज़िम्मे के काम को पूरा करने के बिना किस तरह लोग आराम से सो जाते हैं।" इस प्रकार के उनके कार्यकारी जीवन और भाव प्रकाश ने मुझ पर बहुत गहरा असर किया है और मुझमें काम करने की महिमा और उसके भाव को बढ़ाया है।

5. श्री देवगुरु भगवान् जब कभी अपने जन्म दिन आदि के अवसर पर अपने माता पिता, दादी, दादा और गुरु के सम्बन्ध में अपनी कृतज्ञता का प्रकाश करते रहे हैं, तब उनका चेहरा जिस प्रकार रसमय हो जाता रहा है, उनकी आँखें जिस प्रकार डबडबा जाती रही हैं, अथवा उनसे अश्रुधारा बहने लगी है, उनका गला गदगद होकर रुक-रुक जाता रहा है, उनकी आवाज़ मधुमय हो जाती रही है, उसे तो कितने ही कृतज्ञ सेवकों ने अनुभव किया होगा। परन्तु, उनकी एक समय की विचित्र लीला ने मुझ में अपनी माता के सम्बन्ध में एक नई गति पैदा कर दी। वह एक दिन श्राद्ध के सम्बन्ध में सभा करा रहे थे। उसमें वर्णन करते-करते उन्होंने अपनी माता के उपकारी रूप को ज्यों ही स्मरण किया, त्यों ही उन्होंने अपने दोनों हाथ जोड़कर अपने माथे पर रख लिए और फिर उन्हें स्मरण करते-करते उन्होंने अपने सिर को झुकाकर अपने श्रद्धा भाव के उछल पड़ने पर जिस दीनता और नम्रता के साथ उनके विभिन्न उपकारों का वर्णन किया, उसके प्रभावों ने मेरी अपनी माता के सम्बन्ध में अपनी निम्न अवस्था को मुझ पर प्रगट करके मुझे अति दुःखी और लज्जित कर दिया। तब से मैं अपनी माता के लिए प्रतिदिन मंगलकामना का साधन करता हूँ।

एक बार श्री देवगुरु भगवान् बहुत बीमार थे और किसी से मिलने के योग्य न थे। उनके एक पुत्र ने कई बार उनसे उनके दर्शन के लिए आवेदन किया, परन्तु उन्होंने नामंजूर किया। परन्तु जब उनके एक पुराने सेवाकारी ने उनकी सेवा में उनके प्रति अपनी सहानुभूति का पत्र लिखा और उसमें उनके दर्शन करने की अभिलाषा प्रगट की, तब उस पत्र को सुनते ही उनका दिल भर आया और उन्होंने फ़रमाया कि "उनके उपकार मुझ पर बहुत हैं" और उन्होंने लिखवा भेजा कि वह उनसे इस दशा में भी मिल सकते हैं।

चुनौतियों को स्वीकार करो, क्योंकि इससे या तो
सफलता मिलेगी या शिक्षा।

उस समय का यह अति सुन्दर दृश्य मेरे हृदय पर अंकित हो गया।

एक दिन मैंने एक जंगली गुलाब के सुन्दर फूल लाकर उन्हें अर्पण किए। उन्हें देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि जिस गुलाब ने हमें ऐसे अच्छे फूल दिए हैं, हमें भी उसकी कोई सेवा करनी चाहिए। यह पौधा एक पानी के चश्मे पर लगा हुआ था। उसकी बेल एक और वृक्ष पर चढ़ी हुई थी और वह किसी सेवा का मोहताज न था। भगवान् ने उसके लिए मंगलकामना की और मुझे कहा, "प्रतिदिन उसे फूल न तोड़ना कभी-कभी थोड़े से फूल ला सकते हो।"

6. श्री देवगुरु भगवान् किसी व्रत आदि के अवसर पर अपने गुरु महाराज की छवि को जिस प्रकार सजाते रहे हैं तथा उनके उच्च गुणों और इस लोक व परलोक में अपने और अपने पारिवारिक सम्बन्धियों पर उनके विभिन्न उपकारों को जिस प्रकार मेरे सम्मुख भी याद करते रहे हैं, उसने मेरे गुरु पूजा विषयक भाव को उन्नत करने मे सहायता की है।

7. श्री देवगुरु भगवान् अपने कर्मचारियों के सम्बन्ध में कितनी बार उनकी विभिन्न त्रुटियों और हीनताओं पर अपने दु:ख और उनके हित के लिए अपनी शुभ आकांक्षाओं का प्रकाश करते रहते हैं। एक बार उन्होंने फ़रमाया, "मुझे उच्च व्रतधारी आत्माओं की आवश्यकता है, क्योंकि उच्चव्रतधारी आत्माओं के द्वारा ही मेरा कार्य चल सकता है।" एक ऐसे ही और अवसर पर उन्होंने फ़रमाया, "तुम जिस उच्च शक्ति को विकसित करके अपने निम्न कोषों के स्वामी बनोगे, उसके द्वारा जहाँ तक सम्भव है, तुम उससे विहीन जनों पर भी अधिकार लाभ कर सकोगे।" उनके इन शब्दों ने मुझ पर इतना असर किया है कि मैं उन्हें याद करके घण्टों अपने और अपने साथी सेवकों के जीवनों में उनके इस पहलु में दु:ख के दूर करने के लिए कामनाएं करता रहा हूँ।

8. श्री देवगुरु भगवान् विभिन्न मतों के अवलम्बियों को अपने-अपने मिथ्या मतों का जोश से प्रचार करते देखकर और अपने कितनें ही सेवकों का सत्य धर्म के प्रचार में कोई सन्तोषजनक उत्साह न देखकर बहुत दु:खी हुआ करते हैं और कहा करते हैं, "मालूम नहीं, हमें कब सत्य और हित की जय पर पूर्ण विश्वास करने वाले, बड़े-बड़े उत्साही प्रचारक सेवक प्राप्त होंगे।" मुझ पर उनकी बार-बार की इस आकांक्षा ने भी अपना प्रभाव डाला है।

ऐसा हो कि उनके श्री चरणों में रहकर उनके अद्वितीय देव जीवन के जिस क़दर विभिन्न उच्च प्रभाव मुझे प्राप्त हुए हैं, वह मेरे आत्मा की उच्च गति में सदा काम कर सकें।

- सेवक (1/12)

जीतने वाले अलग चीज़ें नहीं करते, वह चीज़ों को
अलग तरह से करते हैं।

नेचर के चारों जगतों के सम्बन्ध में भगवान् देवात्मा का दैनिक जीवन

भौतिक जगत्, उद्विद जगत्, पशु जगत् और मनुष्य जगत् के जिन-जिन अस्तित्वों को परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सम्पर्क में आना पड़ता था, और उनके साथ सम्बन्ध होने से इन अस्तित्वों की जो पहले से बेहतर अवस्था हो जाती थी, उसका अध्ययन अत्यन्त दिलचस्प और एक-एक अधिकारी आत्मा को उच्च लोक में पहुँचाने वाला है। जब भी किसी अधिकारी आत्मा को भगवान् देवात्मा के देवालय, (शोक कि हमारा यह पवित्र तीर्थ स्थान अब पाकिस्तान में रह गया है - सम्पादक) उसके अहाते और कमरों के अन्दर जाने का मौका मिलता था, तब ही वह वहाँ की सफ़ाई, तरतीब और खूबसूरती को देखकर बहुत प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सकता था। देवालय की चीज़ें अपनी ज़बान-ए-हाल से मानो यह कहती थीं कि वह आज ही खरीदी गई हैं; यद्यपि उनको खरीदे हुए बरसों के बरस गुज़र चुके थे। कुर्सियां मेज़ चीनी की प्यालियां चमकती हुई मालूम होती थीं। यद्यपि वे कई सालों की खरीदी हुई थीं, यही हाल अलमारियों का था, जिनमें कि भगवान् की पुस्तकें रखी हुई थी (शोक कि यह अलमारियां, कुर्सियां, मेज़ आदि पाकिस्तान बनने के बाद लाहौर में ही रह गईं। लाहौर देवालय का बाकी सामान पर्वताश्रम सोलन पहुँचा दिया गया है।

दीवारों की सजावट, कमरों की छोटी मोटी चीज़ों की तरतीब और परिष्कारिता में भगवान् देवात्मा का ही बहुत कुछ हाथ था। वह इन सबके साथ अपना ज़िन्दा सम्बन्ध महसूस करते थे और अपने अन्दर न्याय की भावना संजोये रखने के कारण से इन सब चीज़ों को निहायत की साफ़ सुथरा और बहुत बड़ी सावधानी के साथ सुरक्षित रखते थे और चीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा समय तक क़ायम रखने और उनके ज़्यादा से ज़्यादा लाभदायक साबित होने की कोशिश करते थे।

पूजनीय भगवान् के अपने रिहायशी मकान में हर एक चीज़ के रखने की जगह नियत थी। किसी चीज़ के इस्तेमाल करने के बाद उसको उसी जगह रखा जाता था और इस बात का इतना ख़्याल रखा जाता था कि किसी चीज़ को अन्धेरे में ढूँढने में भी कोई दिक़्क़त पेश न आवे। भगवान् का ऐसा देव स्वभाव था कि उनके लिये यह बिल्कुल असम्भव था कि किसी चीज़ के इस्तेमाल के बाद उसको अपनी जगह पर न रखा जावे या किसी नई चीज़ को भी उसकी अपनी उचित जगह पर न रखा जावे। समाज का जो रुपये बैकों में जमा है, एक दफ़ा उसकी एक रसीद का कुछ पता न लगता था। जो कर्मचारी इन रसीदों के चार्ज में थे, उनको वह रसीद अपने काग़ज़ात में

संयम और परिश्रम इन्सान के दो सर्वोतम चिकित्सक हैं। परिश्रम से भूख तेज़ होती है और संयम अति से रोकता है।

नहीं मिलती थी। इसलिये वह भगवान् देवात्मा के पास गये। उनसे प्रार्थना करने लगे कि कहीं आपके काग़जात में तो वह रसीद नहीं रह गई? पूजनीय भगवान् ने उस वक़्त फ़रमाया कि अगर वह रसीद मेरे पास आई होगी तो उचित जगह पर, जहाँ मैं अपनी रसीदें रखता हूँ, वही हो सकती है। उनकी रसीदें देखने पर भी वहाँ से वह रसीद न मिली। तब इस पर उन कर्मचारी साहिब ने पूजनीय भगवान् से अर्ज़ की कि भगवान्! वह रसीद कहीं और न रख दी गई हो। तब पूजनीय भगवान् ने फ़रमाया,

"मेरे लिये सम्भव ही नहीं कि कोई चीज़ मेरे पास आवे और मैं उसको उसी वक़्त उचित जगह पर न रख दूँ। अगर हम सेहत की हालत में होंगे, तो उसी वक़्त उस चीज़ को उचित जगह पर रखेंगे। अगर हम उस वक़्त ख़ास जिस्मानी कमज़ोरी के कारण ऐसा नहीं कर सकते होंगे, तो किसी और से उस वक़्त ऐसा करवा देंगे। ऐसा करके या कराकर हम दम लेंगे। सुस्ती करना हमने कभी सीखा ही नहीं। जब वह रसीद उस संदूकची के उस ख़ास लिफ़ाफे के अन्दर नहीं है, तब वह हमारे पास हरगिज़ नहीं हो सकती।" आखिरकार तलाश करने पर वह रसीद उपर्युक्त कर्मचारी के काग़जात में से ही मिल गई।

भगवान् अपने कपड़ों, जूतों, बिस्तरों आदि को निहायत ही साफ़ रखते थे। पूजनीय भगवान् की मेज़ पर जो लैम्प होता था, वह भी निहायत साफ़ सुथरा रखा जाता था। जो लोग भगवान् देवात्मा के पास रहते थे, उन्होंने भी एक हद तक उनके इस तरतीब और सफ़ाई के बहुत बड़े गुण को ग्रहण कर लिया था और पूजनीय भगवान् के लिए इस पहलू में अच्छे सेवाकारी होते रहे थे।

मैं भगवान् देवात्मा की घड़ी को देखता हूँ, जिसको ख़रीदे हुए कितने ही साल हो गये हैं, लेकिन उसे देखकर हमें किसी तरह यकीन नहीं आता कि यह घड़ी बहुत सालों की खरीदी हुई है। यह बिल्कुल नई मालूम होती है। इसको बिल्कुल नियत समय में चाबी दी जाती थी। चीज़ों के सम्बन्ध में बेक़ायदगी, बेतरतीबी पूजनीय भगवान् के स्वभाव में ही नहीं आई। अगर पूजनीय भगवान् की मेज़ पर रखी हुई पैंसिलों को देखा जावे, तो वह भी बहुत ही साफ़ हालत में होंगी। उनको बहुत अच्छी तरह से घड़ी हुई पाओगे। उनकी इस पहलू में ही तरतीब और सफ़ाई को देखकर मैंने बहुत दफ़ा निहायत ही अच्छे असर हासिल किये हैं।

वह कोई भी काम अधूरे तौर पर नहीं करते थे। वह जो भी काम करते थे हालात में जहाँ तक सम्भव हो, उसको बेहतर से बेहतर तौर पर पूरा करते थे। किसी

अपने हौंसलों को यह मत बताओ कि तुम्हारी परेशानी कितनी बड़ी है। अपनी परेशानी को यह बताओ कि तुम्हारा हौंसला कितना बड़ा है।

काम के सम्बन्ध में बेगार काटना वह जानते ही नहीं थे। जो भी काम वह करते थे, उसको पूर्णता तक पहुँचाने के बग़ैर उनको किसी तरह चैन ही नहीं आती थी। अगर भगवान् देवात्मा के फूलों के गमलों और उनकी क्यारियों को देखा जावे, तो वहाँ पर भी हमको वही बात दिखाई देगी। फूलों के गमले और उनकी क्यारियों को देखा जावे तो वहाँ पर भी हमको वही बात दिखाई देगी। फूलों के गमलों आदि को देखभाल पूजनीय भगवान् खुद या उनके अपने नौकर रखते हैं। वह भी अपनी ज़बान-ए-हाल से यह कहते हुए सुनाई देते थे, कि हमारे बहुत बड़े सौभाग्य हैं, कि हम ऐसे मालिक के घर में आ गए। (शोक कि भगवान् का यह बाग़ीचा और गमले आदि सब लाहौर में ही रह गए - सम्पादक) उनकी बाह्य शक्ल, तरतीब, उनकी सजावट और सफ़ाई, उनकी ताज़गी प्रगट करती थी कि वह किसी बहुत बड़े बोधी आत्मा की रक्षा में हैं। पूजनीय भगवान् के स्वभाव में यह बात निहायत ही ग़ौर मामूली तौर पर आई थी, कि जो भी चीज़ उनके ताल्लुक में आये, वह किसी तरह भी उचित समय से पहले ज़ाया न हो। और जितनी वह ज़्यादा से ज़्यादा मुफ़ीद हो सकती है, उसको उतना ही मुफ़ीद बनाया जावे और समय से पहले उसके सौन्दर्य और रूप को बिगड़ने न दिया जावे।

यह अत्यन्त अजीब बात है कि भगवान् को पौधों की अपील बहुत ही जल्दी सुनाई दे जाती थी। वह जब किसी पौधे को वक़्त से पहले मुरझाई हुई हालत को देखते थे, तो वह बेचैन हो जाते थे। वह उसके मुरझाने के करण को जानने के लिए पूरी-पूरी को कोशिश करते थे, और उसको तरो-ताज़ा करने और उसकी उम्र को बढ़ाने और क़ायम रखने के लिए प्रत्येक सम्भव यत्न करते थे। उच्च बोध रखने के कारण इन पहलुओं में पूजनीय भगवान् ने जो सेवायें की हैं, वह दिल को निहायत ही छूने वाली हैं।

मैंने देखा कि भगवान् देवात्मा के घोड़े के कमरे को बहुत अच्छी तरह से साफ़ सुथरा रखा जाता था। जिस वक़्त घोड़ा लीद करता था, उसी वक़्त लीद को उठा दिया जाता था। घोड़े को कभी भी मैली जगह में नही बांधा जाता था। उस बेज़ुबान जानवर की बेहतरी का उनको निहायत ही ख़्याल रहता था। अगर सर्दी की रात हो और उनके दिल में यह ख़्याल गुज़र जावे कि कहीं नौकर ने घोड़े को बाहर ही न बाँध रखा हो, चाहे कितनी ही रात क्यों न गुज़र चुकी हो, वह उस वक़्त घोड़े का पता लेते थे और जब उनको यह पता लग जाता कि घोड़ा अन्दर बन्धा हुआ है, तब उनको तसल्ली होती। क्योंकि वह सब पहलुओं में घोड़े की ख़बरदारी रखते थे। इसलिए सेवादार भी चौकन्ना रहता था और अपने फ़र्ज़ को बहुत अच्छी तरह से पूरा करता था। पूजनीय भगवान् की

सफलता का कोई रहस्य नहीं है, यह तैयारी कड़ी मेहनत, असफलता से सीखने का ही परिणाम होता है।

गाड़ी भी बहुत साफ़ रखी जाती थी। घोड़े के चारे और दाने वग़ैरा का बहुत अच्छी तरह से ख्याल रखा जाता था। और उसकी हर एक ज़रूरत की तरफ़ पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता था और घोड़ा अपनी जुबाने हाल से यह कहता हुआ मालूम होता था कि मेरे बहुत बड़े सौभाग्य हैं कि मुझे ऐसे बोधी और मेरी सब प्रकार से पूरी-पूरी रखवाली करने वाले मालिक के घर में आने का मौक़ा मिल गया।

श्रीमान् पंडित संतराम जी भगवान् देवात्मा के निज के सेवादार हैं। वह देव समाज की एक बहुत लायक और वफ़ादार कर्मचारिणी परलोकवासी श्रीमती धर्मप्यारी जी के सगे भाई हैं। पंडित जी ने कोई अंग्रेज़ी तालीम नहीं पाई। पूजनीय भगवान् उनसे सिर्फ़ वह सेवाएं पाने का ही सम्बन्ध नहीं रखते थे कि जिनके लिये वह मुलाज़िम थे, बल्कि वह उनके दिमाग़ और आत्मा को बेहतर करने का भी बहुत संग्राम करते रहते थे। इसलिए पूजनीय भगवान् के यह मुलाज़िम रूहानी जगत् की कितनी ही गहरी सच्चाइयों को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं, जब कि बहुत से पढ़ेलिखे जन भी उन सचाइयों के समझने के नाक़ाबिल हैं। उनको सख़्त ताक़ीद थी कि वह अपना निज धर्म साधन हर रोज़ किया करें। मेमोरियल मन्दिर या पर्वताश्रम सोलन में देवसमाज के जो साधन होते थे, उनमें शामिल होने के लिए न सिर्फ़ उनको खुली इजाज़त थी, बल्कि ऐसा करने के लिए उनको कितनी बार कहा जाता था। आला रूहानी कुर्रे और उच्च संगत से लाभान्वित होने के लिए उनके लिए उचित सामान पैदा किए जाते थे।

सारांश यह कि कोई भी चीज़ पशु या मनुष्य, जो भगवान् देवात्मा के ताल्लुक़ में आते थे, वह उनकी काया को पलट कर आगे से बहुत बेहतर बना देते थे। अगर किसी की लापरवाही से किसी चीज़ का नुक़सान हो जाये, उसकी बाह्यक शकल पहले से बदतर हो जाये, तो पूजनीय भगवान् के देव हृदय पर सख़्त चोट लगती थी, एक-एक दफ़ा ऐसा हुआ कि एक जन चारपाई बाहर निकालने लगा। उसने अपनी लापरवाही से चारपाई को दीवार में मारकर दीवार को तोड़ डाला, तो पूजनीय भगवान् ने उस वक़्त ऐसा प्रकाश किया कि तुम्हारे इस दीवार को तोड़ने से मैंने ऐसा मालूम किया है कि तुमने मेरे जिसम को काट डाला है। साधन होने लगा है, साफ़ चादर साधन कमरे में बिछी हुई है। एक जन अपनी लापरवाही से अपने पांवों को साफ़ करने के बगैर ही चादर पर चला जाता है और अपने मैले पांवों से चादर को ख़राब कर देता है, तो ऐसे वक़्त में पूजनीय भगवान् ने इस तरह प्रकाश किया है कि तुमने जो चादर को ख़राब किया है, मैंने ऐसा मालूम किया है, जैसे किसी ने मेरी छाती पर पांव रख दिये हैं।

जहाँ हिम्मत समाप्त होती है, वहीं से हार की शुरुआत होती है। आप धीरज मत खोइए, अपना क़दम फिर से उठाइए।

भगवान् देवात्मा प्राय: हर रोज़ ही अपने सेवकों और कर्मचारियों से मिलने का नियत समय रखते थे। जहाँ तक समय का सम्बन्ध है, पूजनीय भगवान् उनको ठीक समय पर मिलते थे। जो लोग उनके दर्शनों के लिये लाहौर या सोलन पहुँचते रहते थे, वह उनको बहुत अच्छी तरह से मिलते थे। कई बार बीमार होने की सूरत में भी अपने ऊपर ज़बर करके भी पूजनीय भगवान् यात्रियों को दर्शन देते थे। मिलने-जुलने में अपने एक छोटे से छोटे सेवक का भी वह बहुत ख्याल रखते थे। जो वक़्त उनको मिलने के लिये दिया जाता था, उनको बिल्कुल ठीक समय पर मिलते थे। यदि किसी समय भगवान् की सेहत बहुत ख़राब हो जाती थी और वह लोगों को मिलने जुलने के योग्य नहीं रहते थे, तो सब मिलने वालों को समय से पहले ख़बर दे दी जाती थी कि वह आने की तकलीफ़ न करें। उनके पास रहने वालों की सहूलियत के लिये भी एक नोटिस लिखकर लगा दिया जाता था कि बिमारी की लाचारी के कारण से भगवान् देवात्मा न मिलने के लिये लाचार हैं।

मैंने कई बार देखा कि जब समाज के अखबार 'जीवन तत्व' या किसी लेख या किताब की लिखाई और छपाई अच्छी नहीं होती थी, तो भगवान् को इससे बहुत तकलीफ़ होती थी और उनकी हमेशा यह कोशिश रहती थी, कि देव समाज आफ़िस से या देव समाज प्रेस से जो भी छपाई का काम प्रकाशित हो, वह निहायत ही साफ़ सुथरा और रोशन हो और इस पहलू में त्रुटियों के पूजनीय भगवान् अपनी आला मिसाल और अपने तेजस्वी उपदेशों और लेखों के द्वारा हमारी ज़िन्दगियों को भी इस क़दर आला बनाने की कोशिश करते रहते थे कि हम भी जिस किसी बेजान चीज़ पौधे, पशु या मनुष्य के सम्पर्क में आये, उसके साथ हमारा बर्ताव सभ्यतामूलक, न्यायमूलक और मानवता को लेकर हो और जो भी अस्तित्व हमारे सम्पर्क में आयें, हम उनको अपने बर्तावों से आला से आला और मुफ़ीद से मुफ़ीद बनाने की यथासम्भव कोशिश करें।

भारतवर्ष के लोगों के अन्दर सदियों से जो यह अत्यन्त हानिकारक और भयानक विश्वास बैठा हुआ था कि धर्म का जीवन या आला जीवन मनुष्य को तब ही प्राप्त हो सकता है, जब कि वह अपने सब सम्बन्धों को त्याग दे, उनके सम्बन्ध में अपने सब कर्त्तव्यों को अदा करने से बिल्कुल बेसुध हो जावे, भगवान् देवात्मा ने इस मिथ्या शिक्षा को जड़ मूल सहित नष्ट कर दिया है। उनकी शिक्षा यह है कि विभिन्न सम्बन्धों में अपने कर्त्तव्यों कर्मों को अच्छी तरह से पूरा करने से और अपने सम्पर्क में आने वाले अस्तित्वों को पहले से बेहतर करने में ही आला ज़िन्दगी है। विभिन्न सम्बन्धों में अपने

मौत का डर जीवन के डर का पीछा करता है, जो व्यक्ति पूर्ण जीवन जीता है, वह किसी भी क्षण मरने के लिए तैयार रहता है।

कर्त्तव्यों के पालन में गफ़लत करने आरैर अपने सब सम्बन्धों को त्यागकर पत्थर या ढेले की तरह बन जाने में जीवन की तबाही है। पूजनीय भगवान् की यह शिक्षा है कि हमारे सब सम्बन्ध नीच अनुरागों और नीच घृणाओं को लेकर न हों, बल्कि निष्काम सेवा के भावों से भरकर ही हम अपने सब सम्बन्ध स्थापन करें।

- पी.वी. कनल

देवात्मा के श्री चरणों में निवास करने के अमूल्य लाभ

परम पूजनीय श्री देवगुरु भगवान् ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है कि उन्होंने मुझे अपने श्री चरणों में रखना स्वीकार कर लिया है। इससे मेरा बहुत कल्याण होता है। उनके श्री चरणों में रहकर और उनकी कोई छोटी मोटी सेवा करने का अधिकार पाकर मुझे जो-जो लाभ होते रहते हैं, मैं उन्हें यहाँ पर लिखता हूँ -

1. उनके श्री चरणों के समीप रहने से मेरा अहंकार दिनोंदिन घटता जाता है। मैं जब उनके सामने या उनके समीप बैठता हूँ, तब स्वभावत: मुझे अपने आप बहुत छोटा दिखाई देता है, इसलिए अपने अहं के विरुद्ध इस क्रिया के होते रहने से उसका घटना ज़रूरी हो गया।
2. उनके श्री चरणों में रहकर उनके किसी कार्य को करने का अधिकार पाकर समय बोध जाग्रत होता आता है, इसलिए जब कभी नियत समय पर कोई काम नहीं कर सकता, तो कई बार बहुत दु:ख होता है।
3. उनके सम्बन्ध में किसी प्रकार की सेवा करने का अधिकार पाकर कर्त्तव्य बोध जाग्रत होता आता है। इसलिए अपने जिम्मे के कामों को पूरा कर देने की बहुत चिन्ता रहती है, जब कभी किसी काम को भूल जाता हूँ, तब मुझे इस विषय में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। अपने आपको धिक्कारने और सज़ा देने को जी चाहता है और सज़ा देता भी हूँ। दृष्टान्त रूप में आज दोपहर को उनका बिस्तर धूप में डालना भूल गया था, जब सायं काल को यह भूल सामने आई, तब उस समय मैंने अपना कान ख़ूब ज़ोर से मरोड़ा और खींचा कि क्यों मुझे याद न रहा? इस प्रकार और कई कामों के सम्बन्ध में भी जब अपना कर्त्तव्य पालन नहीं कर सकता, तब इसी प्रकार एक व दूसरा दण्ड कई बार अपने आप ही ले लेता हूँ और जब अपने किसी कर्त्तव्य का पालन कर लेता हूँ, तब कई बार बहुत बड़ी खुशी होती है।

निर्मलभाव से किया गया प्रत्येक काम हमें सन्तोष देने वाला होगा ।

4. भगवान् हितस्वरूप हैं। उनके जीवन से जो कार्य सम्पन्न होते हैं, वे सब मनुष्यात्माओं के हित के लिए हाँ, सब जगतों के हित के लिए होते हैं। इस हित भाव में उनके शारीरिक रोग और शरीर सम्बन्धी नाना आवश्यकताएँ भी छुप जाती हैं, वह उन से ऊपर हो जाते हैं। उनके आदर्श रूप जीवन से इस भाव को (अधिक से अधिक हितकर कार्य करने के भाव को) अपने भीतर करने का कुछ न कुछ, अवसर मिलता रहता है और उसका परिचय भी मैं अपने जीवन की कई घटनाओं में पा चुका हूँ। यह उनके श्री चरणों में रहने और उनकी किसी छोटी-मोटी सेवा करने के अधिकार का फल है।

5. उनके साथ कोई आत्मा वासनामूलक सम्बन्ध स्थापन करके बहुत देर जुड़ा नहीं रह सकता। और बिना किसी उच्च सूत्र से जुड़ने के लगातार उनके समीप रहना और उनके जीवनव्रत में काम आना असम्भव है। मैं जो कितने ही काल से उनके श्री चरणों के समीप रहकर उनके छोटे-मोटे कार्य को करने का अधिकारी रहा हूँ, वह न रह सकता, यदि किसी उच्च सूत्र से उनसे न बन्धा हुआ होता। उस सूत्र व उन सूत्रों को चाहे मैं ठीक तौर पर न भी जान सकूँ, तो भी मैं उनसे जूड़ा हुआ हूँ और उनके किसी न किसी कार्य को करता रहता हूँ।

   एक सूत्र तो मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि मैं उनके उपकारों को पाकर उनका बहुत बड़ा देनदार बन गया हूँ, उनका बोझ मुझसे किसी प्रकार उतर नहीं सकता। यदि मैं उनकी किसी सेवा में जान बूझकर कोई भी कमी करूँ, तो फिर मैं सच्चा धर्म अभिलाषी अथवा अपना शुभ मार्गगामी नहीं रह सकता और उनका चोर प्रमाणित होता हूँ। उनकी ओर से इस अधिकार का दान भी उनके उपकार के बोझे को मुझ पर और अधिक बढ़ाता है और मेरे घमण्ड को तोड़कर उनके श्री चरणों में झुकाता है और मेरी आँखों और सिर को उनके सामने ऊपर नहीं उटने देता। यह उनकी सेवा का ही फल है कि मेरे भीतर यह ऋण परिशोध का भाव बढ़ा है।

6. उनके श्री चरणों में रहकर और उनके किसी न किसी काम आकर ही मेरे भीतर के दोष मुझे दिखाई देते हैं। जब मेरी नीच प्रकृति की कोई नीच घटना उनके व उनके सम्बन्धियों के सम्बन्ध में होती है, तभी मेरे कान खींचकर गर्मकर दिये जाते हैं। झट कोई झाड़ पड़ जाती है या दण्ड मिल जाता है। उनके समीप रहकर और अपने भीतर उनके सम्बन्ध में विघ्न डालने वाले दोषों को रखकर उनके साथ सम्बन्ध

अद्भुत तो व्यक्ति के सद्कर्म है जो उसके परलोक
जाने के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं।

स्थिर नहीं रह सकता। अब जबकी उनकी श्री चरण धूलि में पड़े रहकर उनके काम आना मेरा लक्ष्य है, तब उनके किसी काम आने के लक्ष्य की सिद्धि के लिये मुझे कई दोषों से ऊपर होना ज़रूरी हो गया है और निश्चय मैं उनसे कुछ न कुछ ऊपर होता भी जाता हूँ। यह सब भगवान् की शरण में रहकर उनकी सेवा करने का फल है।

7. कल उनके 'आत्म परिचय', 'शान्ति और आनन्द' की कॉपी करते समय मुझे अपने धन्य भाग्य अनुभव हुए कि मैं उस स्थान में प्रतिदिन पहुँचता हूँ कि जहाँ वह अपने देव प्रभावों को अपने इर्द गिर्द फैला रहे होते हैं और उस समय मेरा आत्मा उनकी चरण सेवा करते-करते विभिन्न प्रकार के दृश्य देखता और अनुभव करता है। अनेक बार मैं मानो नाटक के दृश्य देखा करता हूँ। कभी उनकी महान् महिमा मेरे सामने आकर मेरे हृदय को झुकाती है, कभी थोड़ी देर में अपनी किसी नीचता को देखकर दु:खी होने लगता हूँ, कभी अद्वितीय और पूर्णाङ्ग धर्मावतार के श्री चरणों को स्पर्श करके अपने धन्य भाग्य अनुभव करता हूँ, कभी उनके श्री चरणों में चिरकाल तक रहने के अधिकार की रक्षा के लिए और कभी पूजनीय भगवान् के अस्तित्व की रक्षा के लिए मंगलकामना करता हूँ, कभी उनसे उच्च जीवन लाभ करने के साधनों को नियम पूर्वक करते रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ, कभी ऐसी घटना की ओर ध्यान जाता है कि मैं कैसे यहाँ पहुँच गया। मुझे देवात्मा के श्री चरणों को स्पर्श करने का क्योंकर अधिकार मिल गया और ऐसी चिन्ता करके धन्य-धन्य हो जाता हूँ।

मैं कहाँ तक ऐसे थोड़े से काल की सेवा के रस और लाभों का उल्लेख करूँ। उसके आनन्द का बहुत सा भाग तो मुझसे अक्षरों में किसी तरह पर भी बताया ही नहीं जा सकता। मुझे सचमुच का जीवन रस प्राप्त होता है। जिसका प्रमाण यह है कि कई बार शरीर ढीला होता है, कभी कोई चिन्ता (अपनी कमी व दोष की) उदास कर देती है या कभी क्षुधा, तृषा आदि लगी हुई होती है और कभी निद्रा आदि कई अन्य आवश्यकताएं होती हैं, वे सब की सब उस समय मुझसे कई कोस परे चली जाती हैं। मुझे उस समय छोड़कर मानो कहीं बाहर भाग जाती हैं और मैं ऐसा आनन्द और रस अनुभव करता हूँ कि मैं अपने आपको भी कई बार भूल जाता हूँ कि मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ। यह सब पवित्र आनन्द जो लाखों और करोड़ों रुपये ख़र्च करके भी और कहीं से किसी को भी नहीं मिल सकता, वह

निज हित साधने की होड़ में जो व्यक्ति दूसरों को यह एहसास दिलाने में सफल हो जाए कि वह उसके दु:ख दर्द में हमेश उसके साथ खड़ा है, तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

पूजनीय भगवान् की सेवा में रहने से मुझे प्राप्त होता है।
यदि मुझे उनकी सेवा का अधिकार प्राप्त न होता तो मैं उनके श्री चरणों के निकट क्योंकर पहुँच सकता और इस अति हितकर शान्ति और आनन्द के कुर्रे में कुछ देर के लिए भी क्योंकर बास कर सकता? इसके भिन्न इस सेवा के करने से मुझमें निष्काम सेवा का भाव जागता आता है।

8. सैर के लिए पूजनीय भगवान के साथ जाकर, सफ़र में साथ रहकर वह जब भोजन पाते हैं, तब उनके समीप खड़े होकर और इस प्रकार और भी कई कामों में उनके निकट बैठकर मंगल भाव से भरा रहता हूँ। इस भाव के मूल में भी उनकी निकटता का बड़ा दख़ल है। उनके श्री चरणों की समीपता मेरे इस मंगल भाव को रस पहुँचाकर बढ़ाती रहती है।
9. उनकी सेवा का अधिकार पाकर मेरे भीतर विविध हितकर कार्यों के करने की योग्यता बढ़ती जाती है। अब मैं पहले की अपेक्षा अपने इर्द गिर्द के अस्तित्वों के लिए ज़्यादा सेवाकारी बनने के योग्य बनता जाता हूँ। मानो मेरा आत्मा देवात्मा की सेवा करते-करते बहुअंगी बनता जाता है।
10. पूजनीय देवशास्त्र में परम पूजनीय भगवान् के जीवन का प्रतिबिम्ब है, इसलिए देवशास्त्र प्रकाशक की निकटता अथवा सत्संग से देवशास्त्र की बहुत सी शिक्षा उसके पढ़े बिना अपने आप प्राप्त होती जाती है। क्योंकि उनके जीवन से उनकी देव प्रकृति का सदा प्रकाश होता ही रहता है और समीप रहने वाला जन कुछ भी योग्यता रखने पर उनके प्रभावों से अनजाने तौर पर मालामाल होता रहता है। मेरी भी ऐसी ही अवस्था रहती है। देवशास्त्र के अध्ययन किये बिना भी मेरा जीवन देवधर्म शिक्षा के अनुसार कुछ न कुछ ढलता जाता है। यदि मुझे उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त न होता, तो मुझे भी बहुत से और सेवकों की न्याईं उपर्युक्त लाभ कभी न हो सकता।
11. जैसे मैंने सुना है कि किसी रियासत में वहाँ के राजा ने ऐसे पहलवान रखे हैं कि वह अपना यह काम समझें कि उन्हें खूब खा पीकर अथवा व्यायाम आदि करके अधिक से अधिक मोटे और ताकत़वर होना है। ठीक उसी तरह से पूजनीय भगवान् ने मुझे ऐसे सारे काम दिये हुये हैं कि जिन में से हर एक काम को करके मैं आगे से कुछ न कुछ जरूर उन्नत हो जाया करूं और होता भी ऐसा ही है। एक-एक बार नक़ल का काम करते समय मेरे भीतर ऐसे उच्च वलवले पैदा होते हैं कि वह मुझे

खुद को सही साबित करने के लिए तमाम प्रयोग किए जा सकते हैं, लेकिन एक प्रयोग ही आपको ग़लत साबित कर सकता है।

कहीं का कहीं उच्च लोकों के प्रभावों में पहुँचा देते हैं। उनकी आज्ञा से पशुओं और वृक्षों की सेवा करके उनसे शुद्ध प्रेम पैदा होता जाता है। सफ़ाई और तरतीब का काम करके यह दोनों भाव बढ़ते हैं। शुश्रूषा करके शुश्रूषा का भाव बढ़ता रहता है। भगवान् की सेवा में आये हुए सेवकों के पत्र पढ़कर विभिन्न उच्च भाव उत्पन्न और उन्नत होते रहते हैं। उनके पारिवारिक जनों की सेवा करके उनके प्रति सम्मान और प्रीति के भाव जाग्रत होते हैं, आदि-आदि। यह सब कुछ उनकी आज्ञा के अनुसार सेवा करने का फल है।

परम पूजनीय भगवान् के सत्संग और उनकी सेवा की बरकतों को कहाँ तक लिखूँ। एक के अन्तर दूसरी और दूसरी के अन्तर तीसरी बरकत बराबर मेरे सामने आ रही है। परन्तु लिखते-लिखते समय बहुत व्यतीत हो गया है और दोपहर का एक बज गया है। भोजन का समय गुज़र चुका है। इसलिए दो तीन और बरकतों का बहुत ही संक्षिप्त उल्लेख करके अपने इस लेख को समाप्त करता हूँ।

12. अधिक काल तक उनकी सत्संग और उनकी सेवा का अवसर पाकर और उनकी बातचीत सुनते-सुनते कितने ही उन कल्पित मतों का पता लगता रहता है, कि जिनका मैं नाम तक न जानता था और पृथ्वी के सब कल्पित मतों की पोल मेरे सामने खुलती जाती है।
13. पूजनीय भगवान् नाना अखबारों और पुस्तकों में से जो ज्ञान बहुत परिश्रम से संचय करते हैं, उसका सार कई बार थोड़ी सी देर में सुनकर उससे मुझे अवगत कर देते हैं।
14. विभिन्न समयों में उनके साथ वर्ताव में आकर मेरे भीतर शिष्टाचार की रक्षा करने और उसके विषय में और अधिक ज्ञान पाने का प्रबल भाव जाग्रत होता आता है।

इस प्रकार भगवान् की सेवा में काम आने को अपना जीवनव्रत बनाकर मेरा विभिन्न अंगों में बहुत बड़ा हित साधन हो रहा है।

भगवान् का आशीर्वाद मुझे प्राप्त हो कि मैंने जिस जीवन मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा की है, मैं उस पर सदा स्थिर रह सकूँ और उस पर स्थिर रहकर मैं अपना और अधिक हित साधन करने के योग्य बन सकूँ।

- परमेश्वर दत्त (सेवक 14/12)

सब प्रकार के मद में बदनामी का भय सबसे बड़ा होता है।

श्रद्धा सुमन

(श्रीमान जवाहर लाल जी के परलोक गमन पर)

श्रीमान् जवाहरलाल जी, जिन्हें हम सम्मानपूर्वक बड़े श्रीमान् जी कहते थे, का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! श्रीमान् जी से जो प्यार, स्नेह पाया है, उसको शब्दों में बताना मुश्किल है, उसे सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है। जब मैं शिविर में जाती थी, तो श्रीमान् जी बहुत खुश हुआ करते थे। बोलते थे, "वाह जी, वाह बिटिया रानी आ गयी।" प्यार से सिर पर हाथ रखकर खूब शुभकामनायें देते थे।

श्रीमान् जी ने मुझ पर व मेरे परिवार पर जो उपकार किये हैं, उनके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद! श्रीमान् जी न होते, तो हमें तो भगवन मिलने वाले नहीं थे। श्रीमान् जी के निरन्तर प्रयास से हम भगवन से जुड़ पाये। अन्यथा हमें तो आत्मा तो क्या शरीर की भी समझ न हो पाती।

जब श्रीमान् जी का परलोक गमन का समाचार मिला, जो ऐसा लगा कि पता नहीं अपना कोई चला गया हो। मुझे तो ऐसा लगा रहा था कि श्रीमान् जी का परलोकवासी फूलों की वर्षा से स्वागत कर रहे होंगे। श्रीमान् जी को कभी भी दुःखी व परेशान नहीं देखा, वह हमेशा ख़ुश रहते थे। श्रीमान् जी के परलोक गमन के पश्चात् दो-तीन दिन तक तो सुबह आँख खुलते ही श्रीमान् जी का चेहरा सामने आ जाता था। जैसे बोल रहे हों, 'उठो वरजिस कर लो। साधन कर लो।'

मैं श्रीमान् जी से यही आशीर्वाद चाहती हूँ कि जो उनसे सीखा है, उसे जीवन में उतार सकूँ। कभी-कभी लगता है कि यह कैसा परिवार है, जो अपने दुःख में भी दूसरों का भला कर रहा है। श्रीमान जी परलोकगमन के तुरन्त बाद से ही हमारे भले के लिए उनके बेटे (श्रीमान् नवनीत जी) सभायें करवा रहे हैं, अपने दुःख को भुलाकर। आँटी जी (श्रीमान् जी की धर्मपत्नी) श्रीमान् जी के परलोक गमन जाते ही उनका कार्यभार संभाल लिया। अभी श्रीमान् जी को गये हुए चार दिन भी नहीं हुए, मुझे मेरे जन्मदिन की फ़ोन पर ख़ुशी-ख़ुशी बधाई दे रही हैं। कोई दुःख नहीं उनकी आवाज में। शुभकामनायें दे रही हैं , सबको। कैसा है यह परिवार! इतना बल कहाँ से मिला। इस परिवार का प्रत्येक प्रकार से शुभ हो, भला हो, भगवन् की कृपा सदा ऐसे ही बनी रहे।

शुभभाव से

अंजलि अग्रवाल (सुपुत्री श्रीमान् वी के अग्रवाल)(नोयडा, यू.पी.)

हार में भी बहुत कुछ छिपा होता है सीरबने के लिए जो हारने से सीखता नहीं है,
उसके सिर पर जीत का सेहरा कभी नहीं बन्ध सकता।

हमारे लिये बहुत ही दु:ख का विषय है, क्योंकि भगवान् के मिशन के साधनशील, सेवाकारी बहुत ही अनुभवी कर्मचारी, श्रद्धा व विशेष सम्मान के योग्य, हमारे बड़े श्रीमान् जी, श्रीमान् जवाहरलाल जी परलोक की यात्रा पर चले गये हैं।

वैसे तो भगवान् की शिक्षा के अनुसार हमें पूर्ण आशा है कि जिस प्रकार श्रीमान् जी हमारा ध्यान इस लोक में रखते थे, ठीक उसी प्रकार व उससे भी अधिक परलोक में जाने के उपरान्त भी हमारा हर पहलू में ध्यान रखेंगे। परन्तु, हम मनुष्यआत्मा होने के नाते इस स्थूल शरीर से भी लगाव कर बैठते हैं।

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के मिशन के वह एक बहुत ही अनुरागी, तजुर्बाकार, उत्साही, कामयाब प्रचारक थे। काश कि उनकी जगह पूरी करने वाले जन समाज में अधिक से अधिक पैदा हो सकें। श्रीमान् जी का इस लोक में रहना हम सब सेवकों के लिए परम पूजनीय गुरु महाराज का आशीर्वाद था। क्योंकि श्रीमान् जी ही हम सबकी आत्मिक सेवा करके हम सबको जीवनदाता गुरु महाराज से जोड़ने का कार्य करते रहते थे। वह कभी सर्दी-गर्मी, बरसात, धूप-छांव, भूख-प्यास, मान-सम्मान, अपमान की कोई परवाह किए बिना ही प्रचार के इस कार्य में लगे रहते थे, जिससे हम अपनी आत्मा के भले के लिए कुछ सोच पाते थे।

मेरे जैसे व्यक्ति को संभालने में श्रीमान् जी ने लगभग 30 वर्ष से भी अधिक लगा दिए। न जाने कितने संग्राम के बाद वह मुझ जैसे अड़ियल को सत्य धर्म की शिक्षा समझा पाए और मैं अपने जीवन में कुछ परिवर्तन ला पाया। उन्हीं का प्रयास था कि मैं जान पाया 'मैं एक स्थूल शरीर ही नहीं, एक आत्मा भी हूँ। मेरी आत्मा का हित इस बात पर निर्भर करता है कि मैं अन्य अस्तित्वों के लिए कैसे भाव रखता हूँ। इस बात पर निर्भर नहीं करता कि अन्य अस्तित्व मेरे लिए कैसे भाव रखते हैं।'

श्रीमान् जी के उपकारी रूप को बार-बार स्मरण कर पा रहा हूँ कि किस प्रकार से उन्होंने मेरे ऊपर संग्राम करके भजन, कीर्तन, साधन व प्रत्येक अस्तित्व के लिए अधिक से अधिक शुभ भाव में रहना मुझे सिखाया तथा अपने जीवन को सुन्दर बनाना सिखाया। यह श्रीमान् जी का ही प्रयास था कि मैं अपने लिए व अपने साथियों के लिए कुछ अच्छा सोच पाता हूँ। भजन, आरती, देव-स्तोत्र के माध्यम से योग करना व भगवन से जुड़ना भी उन्हीं के प्रयास से मैं सीख पाया हूँ। बार-बार मैं इस समय भारी मन के साथ श्रीमान् जी को याद कर रहा हूँ। उन्होंने इस कार्य में मुझे किस प्रकार से ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया है, यह भी मैं बार-बार स्मृति में देख रहा हूँ।

प्रभावशाली भाषण से कोई नेता प्रभावी नहीं बनता। बेहतर नेतृत्व की पहचान हमेशा अच्छे परिणामों से की जाती है।

किसी भी कार्य की सफलता के लिए जिस त्याग, समर्पण व संग्राम की आवश्यकता होती है, वह हमेशा उनसे सीखने को मिलता रहा। क्योंकि उच्च कार्य की सफलता ही उनका सदैव लक्ष्य होता था। परम पूजनीय भगवान् से प्रार्थना कर रहा हूँ कि इसी प्रकार से आगे भी आपका दान मैं प्राप्त करता रहूँ और बड़े श्रीमान् जी के शुरू किए कार्यों में सेवाकारी होता रहूँ। उनका परलोक में बहुत-बहुत शुभ हो! और वहाँ पर अधिक ताकत के साथ श्रीमान् जी कार्य कर सकें!

निम्न पंक्तियाँ कितनी सत्य हैं -

"सेवक दल है जगत् में सुन्दर बाग समान,
जिसके अक्सर फूल हैं हित की महकती कान।
सुन्दरता इस चमन की किस विद होय बयान,
है लासानी जगत् में जिसकी निराली शान।।"

"माली ऐसे बाग़ के श्री देवगुरु भगवान्, उनके ऐसे काम पर होवें हम कुर्बान।।"

- आपका बच्चा
अनिल गुप्ता (सहारनपुर, यू.पी.)

पिछले लगभग 15 साल से जब कभी भी रुड़की जाना होता रहा है, वहाँ या श्रीमान् जी को हमेशा उत्साह में ही देखा। शिविर के बाद हम सुस्त हो जाते थे, पर वह हमेशा 30 मिनट में सबको इकट्ठा करके सभी सामान को अपनी जगह सम्भाल कर रखवाते थे। उनका सभी का ख्याल रखना, सबके साथ लेकर चलना, सामान को अपनी जगह पर सुरक्षित रखना, भगवन की शिक्षा और उनके मिशन के प्रति उनकी भक्ति को दर्शाता है। हमेशा सभी से हितकर बातचीत करते रहते थे। 'बहुत बढ़िया', 'जीते रहो'। यही दो शब्द हमेशा हर सेवा के बाद मेरे कानों से टकराये। उनका हर प्रकार से शुभ हो! मैं भी जीवन में ऐसे ही सेवा करने का अवसर पा सकूँ और उनके ही पथ पर आगे बढ़ सकूँ। शुभ हो!

- राजेश रामानी (भौपाल, मध्य प्रदेश)

भगवान् देवात्मा के श्री चरणों में पहुँचे श्रीमान् जवाहर लाल जी का शुभ हो! भगवान् देवात्मा ने जैसा लिखा और कहा, वैसा ही श्रीमान् जवाहरलाल जी ने माना और किया। वे तो इकट्ठे हो गए होंगे, भगवन् ने उन्हें अवश्य गले लगा लिया होगा, पास बैठा लिया होगा। बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि अब हम श्रीमान्

जो तुम्हें बुराई से बचाता है नेक राह पर चलाता है और जो मुसीबत के वक़्त तुम्हारा साथ देता है बस वही मित्र है।

जवाहरलाल जी से कोई साक्षात् रूप से बात नहीं कर सकते। परन्तु उनके कहे हुए शब्द हमें हमेशा याद रहेंगे। वहाँ हमें अमृत वेले से ही साधना और योगा करवाते थे। अब हमारी तो यही शुभकामना है कि भगवान् देवात्मा व सहायकारी शक्तियाँ श्रीमान् जवाहरलाल जी की मदद करें। सबका शुभ हो!

– दौलत सिंह कालरा (पदमपुर, राजस्थान)

श्रद्धेय श्रीमान् जी ने न जाने कितने घरों को बर्बाद होने से बचाया, कितने लोगों को नशे की दलदल से बाहर निकाल लाए, कितने परिवारों के आपसी मनमुटावों को सुलझाया, सम्बन्धों को सामान्य बनाया। आपने घर-घर जाकर भगवान् देवात्मा की शिक्षा का प्रचार किया। धन्य थे श्रीमान् जवाहरलाल जी, जो एक अर्थपूर्ण जीवन जीकर इस धरती से गए हैं! बहुत ही अश्रुपूर्ण नेत्रों से उन्हें अलविदा कह पा रहा हूँ। यह तो प्रकृति का नियम है। यहाँ से एक दिन जाना तो सबको है, बेशक ऐसे महापुरुष इस धरती से तो अलविदा हो जाते हैं, पर उनके अपने जीवन में किए गए लोकभलाई के कार्य उन्हें समाज में हमेशा ज़िन्दा बनाए रखते हैं। श्रीमान् जी आपका परलोक में शुभ हो! ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

– राजेश कुमार (कपूरथला, पंजाब)

शुभ गृह प्रवेश

हर्ष का विषय है कि हमारे साथी सेवक श्री अशोक व सुदेश खुराना जी के सुपुत्र श्री आशीष खुराना जी ने लुधियाना में नए फ्लैट लिया है। उसका उद्घाटन 13 नवम्बर, 2021 को शुभकामनाओं के बीच किया गया। इस अवसर पर डॉ0 नवनीत जी ने अपना 15 मिनिट का उद्बोधन भी परिवार के भले के लिए प्रेषित किया।

विजिट सेवा

31 अक्तूबर, 2021 को डॉ. नवनीत अरोड़ा जी, डॉ. सीमा जी, एवं सुश्री अनीता जी ने राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में श्रीमान् मनोहर अचन्तानी जी के स्वास्थ्य का पता लिया। श्रीमती तनवी जी तथा उनका पूरा परिवार भी वहाँ ही मिलने आ गया। सबसे हितकर बातचीत चलती रही। उसी दिन शाम को तीनों धर्म साथी मान सरोवर गार्डन में श्री अनिल अचन्तानी जी से मिले। पिछले दिनों उनके युवा पुत्र श्री कर्ण जी के परलोकगमन हो जाने पर संवेदना व्यक्त की व शुभकामना भी की।

उस निर्लज्जता से बढ़कर निर्लज्जता की बात और कोई नहीं है, जो यह कहती है कि मैं माँग-माँग कर अपनी दरिद्रता का अन्त कर लूँगी।

विवाह अनुष्ठान

हर्ष का विषय है कि हमारे साथी सेवक श्री अभिलक्ष दहिया (सुपुत्र श्री जंग बहादुर सिंह एवं श्रीमती मधु सैनी), शादीपुर (अम्बाला) का शुभ विवाह कु0 रोजी (सुपुत्री श्री बलदेव सैनी एवं श्रीमती हरजीत कौर, गाँव जोगी माजरा, ज़िला कुरुक्षेत्र) के संग 15 नवम्बर, 2021 को रोज़ प्लाज़ा, बबैन (जि. कुरुक्षेत्र) में सम्पन्न हुआ। विवाह अनुष्ठान प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने देव अनुष्ठान विधि से अत्यन्त उत्तमता के साथ सम्पन्न करवाया। सुश्री अनीता सैनी, श्री रविन्द्र कुमार जी एवं श्रीमान् सुरजीत सिंह जी दहिया सहायक प्रमाणित हुए। वर पक्ष की ओर से 5100/-, कन्यापक्ष की ओर से 1100/- एवं श्री रणवीर सैनी जी ने 500/- मिशन को दानस्वरूप मिले। नवयुगल का हर प्रकार से शुभ हो!

प्रेरणास्पद उद्‌बोधन सेवा

28 अक्तूबर, 2021 को **IIT** जम्मू के द्वारा आयेजित **Faculty Development Program** के अन्तर्गत 'सकारात्मक सोच' पर एक प्रेरणास्पद उद्‌बोधन डॉ. नवनीत जी ने दिया। श्री अरविन्द राजपूत जी ने यह सत्र रखवाया। प्राय: 80 प्राध्यापक लाभान्वित हुए।

18 नवम्बर, 2021 को **UIET Chandigarh** में ऑनलाइन चल रहे नवागुन्तक छात्रों हेतु **Orientation Program** में '**Stress Management and Tips to Success**' विषय पर डॉ. नवनीत जी ने उद्‌बोधन दिया तथा तदुपरान्त विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। प्राय: 300 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

शोक समाचार

♦ शोक का विषय है कि हमारे पुराने साथी सेवक श्रीमान् ओम प्रकाश जी वर्मा का 17 नवम्बर, 2021 को प्राय: 79 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप आजकल देवाश्रम, डेराबसी में रहकर अपनी सेवाएं दे रहे थे। आप बहुत विनम्र, मितभाषी, सादा व दानी आत्मा थे। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

♦ शोक का विषय है कि हमारी पत्रिका के सुहृदय पाठक डॉ0 पीयूष कुमार गर्ग जी के माननीय पिता डॉ0 आर्य भूषण जी गर्ग (रुड़की) का 21 मई, 2021 को प्राय: 94 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप जाने-माने शिक्षाविद् व समाजसेवी रहे। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

रास्ता वह भूलता है, जिसे बताने वाले की बात सुनने
की फुरसत नहीं होती।

शोक समाचार

♦ अत्यन्त शोक का विषय है कि हमारे बहुत उत्साही व कीमती धर्मसाथी श्री अनिल कुमार जी गुप्ता (सहारनपुर) का 24 अक्तूबर, 2021 को अचानक हृदयगति रुक जाने से प्राय: 53 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। पूरे मिशन में शोक की लहर फैल गई। हर कोई सुनने वाला स्तब्ध रह गया। आप मिशन के प्रारम्भ से ही ट्रस्टी व **Executive Board** के सदस्य थे। विभिन्न शिविरों को कामयाब करने, सहारनपुर क्षेत्र के सेवकों को उत्साहित करने, मासिक पत्रिका के पाठकों की संख्या को बढ़ाने में आपने अहम् भूमिका निभाई। हम मिशन की ओर से शोक संतप्त परिवार के साथ गहरी हमदर्दी व संवेदना का प्रकाश करते हैं।

25 अक्तूबर, 2021 को आपके पार्थिव देह को अग्नि की भेंट किया गया। रुड़की से डॉ. नवनीत जी, सीमा जी, सुश्री अनीता जी, संजय जी पहुँचे व शुभकामना करवायी गई। श्री राकेश जी गुप्ता व श्री मुकेश जी गुप्ता 2 नवम्बर तक प्रात: व सायं सभी पारिवारिक जनों को लेकर शुभकामना का साधन करवाते रहे। एक दिन डॉ. नवनीत जी ने भी यह साधन करवाया। 27 अक्तूबर को आपके पारिवारिक जन आपकी अस्थियों को लेकर देवाश्रम रुड़की में लेकर आये व शुभकामना का साधन डॉ. नवनीत जी ने करवाया। इस मौके पर लोकल साथी सेवक भी उपस्थित रहे। 03 नवम्बर को सत्संग भवन, सहारनपुर में श्रद्धांजलि सभा डॉ. नवनीत जी ने करवायी। 'अटल सत्य' नामक पुस्तक वितरित की गई। प्राय: 500 जन श्राद्ध सभा में शामिल हुए।

♦ अत्यन्त शोक का विषय है कि उपर्युक्त श्राद्ध सभा के दो दिन बाद 05 नवम्बर, 2021 को हमारे उत्साही साथी धर्मसाथी श्री राकेश कुमार जी गुप्ता (सहारनपुर) को हृदय का दौरा पड़ा और प्राय: 64 वर्ष की आयु में आपका देहान्त हो गया। मिशन व परिवार में किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। आप मिशन के प्रारम्भ से ट्रस्टी व कोर ग्रुप के सदस्य थे। शिविरों को कामयाब करने के भिन्न गोशाला की स्थापना व उसको चलाने में मुख्य भूमिका निभा रहे थे।

रुड़की से डॉ. नवनीत जी, सीमा जी, सुश्री अनीता जी व संजय जी तुरन्त पहुँचे। शुभकामनाओं व वैराग्य विषयक गीतों के द्वारा परिवार को संभालने का प्रयास किया गया। देहत्यागी के लिए शुभकामना करके उसी दिन उनकी अन्त्येष्टि की गई। 07 नवम्बर को आपके पारिवारिक जन आपकी अस्थियों को लेकर देवाश्रम रुड़की में लेकर आए। डॉ. नवनीत जी ने शुभकामना का साधन करवाया तथा

शान्तिपूर्वक जीवन जीने के लिए अपनी मनस्थिति में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

स्थानीय साथी सेवक भी उपस्थित रहे।

16 नवम्बर तक रोजाना शाम को ऑनलाइन शुभकामना का साधन सुश्री अनीता जी करवाती रहीं, जिसमें डॉ.नवनीत जी द्वारा 'अटल सत्य' विषय पर परलोक के सम्बन्ध में तैयार किए गए उद्‌बोधन सुनाये जाते रहे।

17 नवम्बर को सत्संग भवन सहारनपुर में श्राद्ध सभा रखी गई। रुड़की से डॉ. नवनीत जी, अनीता जी, श्री वी.के. अग्रवाल जी सपत्नीक एवं सुशील जी, अम्बाला से श्री अनिल अग्रवाल जी एवं श्री भूषण अग्रवाल जी, लुधियाना से श्री अशोक खुराना जी सपत्नीक तथा आसपास के अनेक धर्मसाथी व पारिवारिक जन इस अवसर पर शामिल हुए।

प्राय: 700 जन श्राद्ध सभा में शामिल हुए उपर्युक्त दोनों कीमती धर्म साथियों का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

♦ शोक का विषय है कि हमारी पत्रिका की सुहृदय पाठक श्रीमती कान्ता जी नागिया (नई दिल्ली) का 28 अक्तूबर, 2021 को प्राय: 79 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप श्रीमान् जवाहर लाल जी के ताया जी की सुपुत्री थीं। रुड़की से डॉ. नवनीत अरोड़ा जी सपत्नीक आर्य समाज मन्दिर, पश्चिम विहार, नई दिल्ली में इनके निमित्त रखी गई श्रद्धाजंलि सभा में शामिल हुए तथा भावपूर्ण भाव प्रकाश किया एवं शुभकामना भी करवायी। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

♦ शोक का विषय है कि हमारे वयोवृद्ध साथी सेवक श्रीमान् रत्न सिंह जी चौहान (कुंआखेड़ा) की सबसे छोटी पुत्रवधू श्रीमती सीमा चौहान (धर्मपत्नी श्री देवाशीष चौहान, सहारनपुर) का 02 नवम्बर, 2021 को प्राय: 38 वर्ष की आयु में अचानक हृदयगति रुकने से देहान्त हो गया। यह घटना पूरे परिवार के लिए यह वज्रपात की भांति है। परलोक में उनका हर प्रकार से शुभ हो!

♦ शोक का विषय है कि हमारे पुराने वयोवृद्ध साथी सेवक श्री जगदीश चन्द जी सैनी (नारायणगढ़) का 14 नवम्बर, 2021 को प्राय: 92 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप बहुत सादा, सरल, विनम्र एवं अपने पाक प्रतिज्ञाओं पर आरुढ़ सेवक थे। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! आपके सम्बन्ध में श्राद्ध सभा नारायणगढ़ में रखी गई, जिसे डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने संचालित किया तथा शुभकामना करवायी। आपका उद्‌बोधन बहुत ही प्रभावशाली व लाभप्रद रहा।

गुरु की सच्ची पूजा अच्छे कर्मों से की जाती है।

आत्मबल विकास महाशिविर

(18-20 दिसम्बर, 2021)

शिविर स्थल : हरमिलाप धर्मशाला, साकेत, रुड़की

भावपूर्ण निमन्त्रण

18-12-2021, शनिवार

प्रात: 09:30 बजे पहला सत्र	:	देवात्मा का निराला बाल्यकाल
प्रात: 11:00 बजे दूसरा सत्र	:	देवात्मा का निराला युवाकाल
सायं 4:00 बजे	:	भजन वेला
सायं 5:00 (साधना सत्र)	:	देव सूर्य हैं देवात्मा
रात्रि 8.30 बजे	:	भक्ति संगीत

19-12-2021, रविवार

प्रात: 9:00 बजे (साधना सत्र)	:	धर्म और अध्यात्म
प्रात: 10:30 बजे (साधना सत्र)	:	गुरु की जरूरत
प्रात: 11:30 बजे	:	विश्वास चिकित्सा/विशुद्ध सेवा सत्र
सायं 4:00 बजे	:	भजन वेला व बाल सभा
सायं 5:00 (व्याख्यान सत्र)	:	देवात्मा दर्शन की विशेषताएं
रात्रि 8:30	:	दीपमाला, ट्रस्ट के नए सदस्यों का निर्वाचन एवं मीटिंग

20-12-2021, सोमवार

(परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का शुभ जन्म दिवस)

प्रात: 6.00 बजे	:	भजन, जन्म वेला की महिमा
प्रात: 9.00 बजे (साधना सत्र)	:	देवात्मा का महाव्रत व हम
प्रात: 11:00	:	विकास पाने का मौक़ा
दोपहर 12:30 बजे (समापन सत्र)	:	आपके भाव व आरती

नोट: कृपया अभी से उपर्युक्त देव प्रभावदायक मण्डल से अपनी आत्मिक बैटरी को चार्ज करवाने का संकल्प लें। रेल रिजर्वेशन आदि करवा लें। हालात अनुकूल होते जायेंगे, विश्वास रखें। अपने आने की सूचना अवश्य दें। जो जन तैयारियों में भागीदारी निभाना चाहें वो 15 या 16 दिसम्बर तक अवश्य देवाश्रम रुड़की में पहुँच जावें। नए जन 17 दिसम्बर सायं तक या 18 दिसम्बर प्रात: 9 बजे तक हर मिलाप धर्मशाला, रुड़की में अवश्य पहुँच जावें। इन दिनों में महाशिविर की सफलता हेतु मंगल कामनाएं अवश्य करें।

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया।
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242